REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

मेरठ नगर के ऐतिहासिक परिदृश्य को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक

डॉ. विजय बहुगुणा[1] , नरेन्द्र कुमार[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तराखण्ड़)
[2]शोध छात्र, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तराखण्ड़)

प्रस्तावना :

मेरठ नगर उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित दिल्ली से 72 किमी0 उत्तर पूर्व में स्थित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन0 सी0 आर0) का हिस्सा है। यहाँ भारतीय सेना की एक छावनी भी है। मेरठ नगर उत्तर–प्रदेश राज्य के सबसे तेजी से विकसित तथा शिक्षित होते नगरों में से एक हैं। नगर का अक्षंशीय विस्तार 28^0 59^1 से 28^0 98^1 उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 77^0 7^1 से 77^0 42^1 के मध्य है। नगर की समुद्र तल से कुल ऊँचाई 219 मीटर है। वर्ष 2011 के अनुसार मेरठ नगर (नगर निगम एवं छावनी) की कुल जनसंख्या 1424908 व्यक्ति है जिसमें 52.98 प्रतिशत पुरूष तथा 47.02 प्रतिशत महिलाएं सम्मिलित है। भारत के शहरी क्षेत्रों में मेरठ 25वें स्थान पर पर तथा जनसंख्या के अनुसार 33वें स्थान पर आता हैं मेरठ भारत में 16वां सबसे बडा महानगरीय क्षेत्र है। जिसमें 1000 पुरूषों के पीछे 888 महिलाएं निवास करती है। मेरठ भारत के उन प्रमुख नगरों में से एक है जहाँ मुस्लिम जनसंख्या (45प्रतिशत) का प्रतिशत सर्वाधिक हैं। यह नगर अपनी कैंचियों के लिए प्रसिद्ध है। तथा भारत की खेल राजधानी कहलाता है। नगर की अधिकांश जनसंख्या सेवा वर्ग तथा छोटे व्यापारियों की है।

मेरठ नगर का ऐतिहासिक परिदृश्य–

मेरठ नगर प्राचीन हस्तिनापुर का अवशेष है जो महाभारत काल में कौरव राज्य की राजधानी थी। जो प्राचीन समय में गंगा नदी बाढ़ में नष्ट हो गयी थी। छठी शताब्दी के बालु पत्थर से बने अशोक स्तंभ का एक अंश जिस पर अशोक ने ब्राहमी लिपि में राज्यादेश खुदवाये थे, मूलतः मेरठ में मिला था। मेरठ मौर्य सम्राट अशोक के काल में बौध धर्म का केन्द्र रहा, जिसके निमार्णो के अवशेष वर्तमान जामा मस्जिद के निकट स्थित है। ग्यारहवीं शताब्दी में, जिलें का दक्षिण– पश्चिमी भाग बुलंदशहर के दौर– राजा हर दत्त द्वारा शासित था जिसके द्वारा बनाये गये किले का उल्लेख, आईने, अकबरी में मिलता है। मेरठ छावनीं ही वह स्थान है, जहाँ हिन्दू और मुस्लिम सैनिकों को बन्दूकें दी गयी जिनमें जानवरों की खाल से बनी गोलियाँ डालनी पड़ती थी। जिन्हें मुख से खोलना पड़ता था। मेरठ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध 1857 के विद्रोह से मिली थी। ईस्ट इण्डिया कंपनी ने जब लोकप्रिय हिन्दी नारा 'दिल्ली चलो' के खिलाफ आवाज

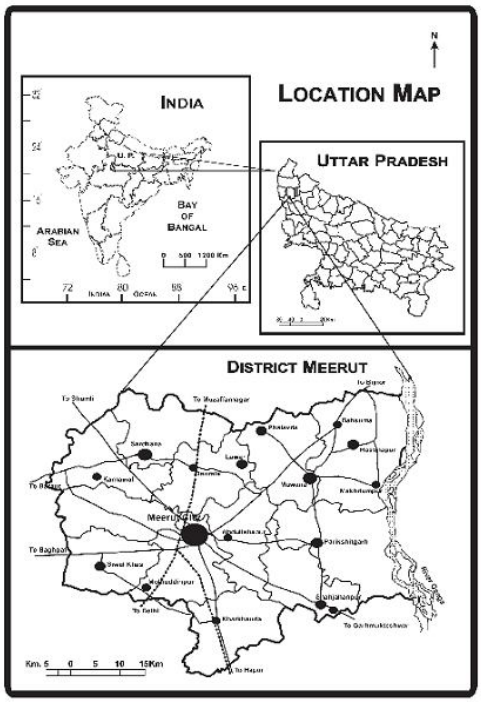

उठाई तब प्रथम स्वतंत्रता संग्राम यहीं पर प्रारम्भ हुआ। मेरठ में ही मेरठ, षड़यंत्र मामला मार्च 1929 में हुआ जिसमें अनेक व्यापारी संघ और तीन अंग्रेजों को गिरफ्तार किया गया था। इसके अतिरिक्त रामायण और महाभारत कालीन अनेक पौराणिक वृतान्तों के साक्षी होने के प्रमाण भी मेरठ नगर को माना जाता है। परन्तु विश्व स्तर पर अपनी विशेष पहचान रखने वाला यह मेरठ नगर आज की बदलती भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अपनी पौराणिक और ऐतिहासिक पहचान को न सिर्फ खाता जा रहा है। अपितु खो चुका है। शोध–पत्र का मूल उद्देश्य भी इस प्राचीन ऐतिहासिक नगर पर वर्तमान भौगोलिक तत्वों द्वारा हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करना है।

ऐतिहासिक परिदृश्य पर भौगोलिक तत्वों का प्रभाव–

भारत के ऐतिहासिक नगरों में अपनी विशेष स्थिति रखने वाला मेरठ नगर आज के बदलते भौगोलिक परिवेश में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक सभी स्तरों पर भौगोलिक तत्वों से पूर्णतः प्रभावित है। जिनमें से कुछ प्रमुख तथ्यों का विवरण निम्न प्रकार है।

भौगोलिक कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक जनसांख्यिकी कारक हैं जिसमें नगर की न सिर्फ सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा को पूर्ण रूपेण प्रभावित किया है अपितु आर्थिक दशा को भी परिवर्तित कर दिया। वर्ष 1847 में मेरठ नगर की जनसंख्या जहाँ मात्र 29 हजार थी वह पिछले 170 वर्षो में बढकर 14 लाख 25 हजार हो गयी है, अर्थात इसमें लगभग 50 गुनी वृद्धि हो गयी है। जिसने नगर में अनेक सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया है। आज मेरठ भारत का मुम्बई और फरीदाबाद के बाद देश की सबसे अधिक स्लम आबादी क्षेत्र की दृष्टि से तीसरे स्थान पर आता है। इतना ही नहीं जनसंख्या और नगरों के दृष्टिकोण से मेरठ उत्तर प्रदेश में चौथी रैंक रखता है। वर्ष 2012 के अनुसार मेरठ में अपराध दर (भारतीय दंड संहिता के अर्न्तगत कुल संक्षेप अपराध प्रति लाख जनसंख्या) 309.1 है। राज्य औसत 96.4 और राष्ट्रीय औसत 196.7 से अधिक है। वर्ष 2013 में प्रसिद्ध भूगोल वेत्ता डा0 एस0सी0 बंसल के निर्देशन में कराये गये शोध के अनुसार विभिन्न पुलिस स्टेशनों से प्राप्त आंकड़ो के अनुसार मेरठ नगर में विभिन्न अपराधों की स्थिति निम्न प्रकार है।

मेरठ नगर में प्रमुख अपराधों का विवरण (2001–2010)

क्र0सं0	अपराध की प्रवृति	अपराधों की संख्या	प्रतिशत
1	चोरी, चकारी	237	13.37
2	चेन स्नेचिंग	1050	60.14
3	हत्या	87	5.0
4	हत्या की कोशिश	122	7.0
5	अपहरण	76	4.36
6	अवध असला धारक	174	9.98
	कुल	**1746**	**100**

स्त्रोतः– मेरठ नगर के तेरह प्रमुख पुलिस थानों के वर्श 2001 से वर्श 2010 के मध्य प्राप्त आंकड़ो के अनुसार

नगर की निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या के कारण मेरठ नगर के निकटवर्ती सैकड़ों गाँवों की हजारो है0 कृषि भूमि योग्य उपलब्ध भूमि का नगर में विलय हो गया है। अभी कुछ समय पूर्व ही दौराला नगर पंचायत सहित 17 गाँवों को प्राधिकरण विकास क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है। मेरठ नगर के विकास तथा आधुनिक आवासीय, औद्योगिक, वाणिज्य एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मेरठ विकास प्राधिकरण द्वार विभिन्न योजनाओं हेतु आस–पास के गाँवों की भूमि अर्जित की है। वर्ष 2014 में प्रस्तावित योजना के अनुसार विभिन्न निकाय एम0डी0ए0 का हिस्सा बनेंगें। **(1)** मवाना नगर पालिका परिषद **(2)** सरधना नगर पालिका परिषद **(3)** खरखौदा नगर पंचायत **(4)** हस्तिनापुर नगर पंचायत **(5)** बहसूमा नगर पंचायत **(6)** लावड़ नगर पंचायत।

मेरठ महायोजना 2001 प्रस्तावित भू–प्रयोग निम्नानुसार है।

क्र0सं0	भू–उपयोग	क्षेत्रफल
1	निर्मित आवासीय क्षेत्र	2119.40
2	आवासीय	4662.40
3	वाणिज्यिक	176.30
4	औद्योगिक	1292.80
5	कार्यालय	303.40
6	गोदाम वेयर हाऊस	192.80
7	सामुदायिक सुविधाएं	1743.60
8	मंनोरंजन व पार्क	2358.60
9	यातायात व परिवहन	1376.90
10	**कुल**	**14223.40**

स्त्रोतः– Verma Gaurav ADM FR, District Disaster Management, Plan Meerut

मेरठ नगर आज भारत में प्रसिद्ध औद्योगिक नगरों की श्रेणी में आता है। यह ऑटोमोबाइल, ट्रांसफार्मर, टयूब, रसायन, कागज और दूध उत्पादों तथा निर्माण व्यवसाय में तेजी से आगे बढ़ रहा है। मेरठ खेल के सामान का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। साथ ही वाद्य यंत्रों का सबसे बड़ा निर्माता है। प्रमुख दवाइयों के निर्माताओं में से एक है। तथा एशिया का नम्बर एक का सरिया बाजार मेरठ में है। परन्तु मेरठ नगर में बढ़ते औद्योगीकरण के कारण नगर में प्रदुषण का स्तर प्रतिदिन तेजी से बढ़ता जा रहा है। उद्योगो से वायु जल तथा ध्वनि प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। औद्योगीकरण के साथ साथ मेरठ में नगर के नगरीकरण का प्रभाव भी स्पष्ट देखा जा सकता है। आज यहाँ बहुमंजिला इमारतें, शॉपिंग कॉम्पलेक्स और अपार्टमेंट, विश्व स्तरीय शॉपिंग मॉल, प्लाजा, पाँच सितारा होटल, रेजीडेंसी, पैलेस, फ्लाई ओवर, मेट्रो रेल, विभिन्न शैक्षिक संस्थान, विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कालेज, मेडिकल कालेज आदि है जो एक और तो नगर के विकास की

कहानी बता रहा है। वहीं दूसरी ओर नगर की प्राचीन ऐतिहासिक विरासत पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है। उपरोक्त नगर विकास के सभी कारक नगर में विभिन्न आपदाओं की आवृति और संभावनाओं को बढ़ा रहे है। जैसे आग, महामारी, बाढ़, भूकम्प आदि 10 अप्रैल 2006 को मेरठ नगर के विक्टोरिया पार्क की आग की घटना इसका प्रमुख उदाहरण है।

मेरठ नगर का नगरीकरण यद्यपि उसके विकास का पर्यायवाची बन गया है। लेकिन वास्तव में यह कड़वा सत्य है कि मेरठ मे नगरीकरण ने उपभोकत्तावाद को बढ़ावा दिया है। इसका अर्थ है कि उर्जा संसाधनों का अधिक प्रयोग जिससे क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। तीव्र नगरीयकरण ने यहाँ की जलवायु पर भी प्रभाव डाला है। पर्यावरण में असंतुलन हो गया है। अतः आज यहाँ इस बात की सख्त आवश्यकता है, कि किस प्रकार इस विकास की दिशा को मोड़ा जाए, जिससे यह यहाँ निवास करने वाले लोगों और उनकी भावी पीढी के लिए लाभप्रद हो।

मेरठ नगर मे हो रहे शहरी विकास, औद्योगिक विकास एवं निरन्तर बढ़ती जनसंख्या ने जल प्रदूषण के खतरे को भी बढ़ा दिया है। नगर में प्रदूषित जल जनित बिमारियों में वृद्धि हो रही है। पानी के साथ–साथ प्रदूषण की समस्या भी आज मेरठ नगर का एक मुख्य संकट बन चुका है। नगर मे निजी वाहनों का प्रयोग भी तेजी से बढ़ रहा है। इनमें से 50 प्रतिशत से अधिक वाहन डीजल के है। इनसे निकलने वाला धुआं स्वास्थ्य के लिए खतरा बन चुका है। अतः नगर में सुविधाजनक सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को तरजीह देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त मेरठ नगर में कूड़ाकरकट के ढेर, नगर के नालें नालियाँ, खुले स्थल, सड़कों व गलियों के किनारे कूड़ा करकट के ढेर से भरे रहते है। इनमें वायु और जल दोनों प्रदूषण की समस्याएँ उभर आई है। साथ ही नगर में जल प्रवाह व्यवस्था भी चरमरा गई है। इस प्रकार मेरठ नगर के विकास की अनेक ऐसे भौगोलिक कारकों ने विकास के पथ पर तो अग्रसर किया है परन्तु नगर का ऐतिहासिक अस्तित्व कहीं गुम सा हो गया है। अनेक ऐतिहासिक स्मारक विकास की चकाचौंध मे विलुप्त से हो गये है। जिसके लिए आवश्यक है कि नगर के अनेक प्राचीन स्मारकों, शहीद स्मारकों, तीर्थ स्थलों, धार्मिक स्थलों, पर्यटन स्थलों तथा अभ्यारण्यों जो आज जीर्णावस्था में है उनका पुर्नउदार कर पुनः विश्व पटल पर लाना होगा जो न सिर्फ ऐतिहासिक दृष्टि कोण से अपितु मेरठ नगर के विकास में भी मील का पत्थर सिद्ध होगा।

संदर्भ

1 बंसल, एस0सी0 : नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ–2014
2 बंसल, एस0सी : उत्तर प्रदेश का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ–2014–15
3 त्रिपाठी, के0एन0 : उत्तर प्रदेशः एक समग्र अध्ययन, बौधिक प्रकाशन, मेरठ–2016
4 त्रिदेव एवं श्रीवास्तव : पर्यावरण एवं सामाजिक सरोकार, कन्सैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी प्राईवेट लि0 नई दिल्ली–2011
5 Verma Garurav : ADM FR, District Disaster Management Plan, Meerut
6 भारत की जनगणना : 2011

डॉ. विजय बहुगुणा
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तराखण्ड़)

नरेन्द्र कुमार
शोध छात्र, भूगोल विभाग, डी. बी. एस. (पी.जी.) कालेज, देहरादून (उत्तराखण्ड़)